Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 2 | Aug – 2015

अहमदशाह अब्दाली का मुगल साम्राज्य पर द्वितीय आक्रमणःएक पुनरावलोकन

डॉ. मनोज सिंह यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर,इतिहास विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर,भदोही, उत्तर प्रदेश.

यद्यपि मनुपुर के युद्ध में मुगलों की विजय हुई थी और अब्दाली अपनी खराब स्थिति को देखते हुए लाहौर के रास्ते काबुल तथा कंधार की तरफ चला गया था। किन्तु भारत कां विजित करने के अपने सपने को वह दिल से निकाल नहीं पाया था। इधर जब मुगल सम्राट मुहम्मदशाह का युद्ध के परिणाम के विषय में जानकारी प्राप्त हुई तो ''बादशाह इसको वजीर की जांफिशानी और सफदरजंग व मुईन–उल–मुल्क की तनदिही का नतीजा समझकर खुश हुआ और कमरूद्दीन खाँ के बेटे मुईन–उल–मुल्क को लाहौर व मुल्तान की सूबेदारी सौंपी।''[1] इस प्रकार से मुहम्मदशाह ने मीर मन्नू को मुल्तान और लाहौर की सूबेदारी प्रदान कर दी तथा शाहजादा अहमद तथा सफदरजंग को दिल्ली पहुँचने का आदेश दिया। ''19 अप्रैल को एक शाही फरमान शाहजादा अहमद के पास पहुँचा। अतः उसने मीर मन्नू को 21 अप्रैल को अपने नये कार्यकाल पर भेज दिया और 22 अप्रैल को नासिरखान को काबुल भेज दिया।''[2] इसके पश्चात् युवराज अहमद तथा सफदरजंग दोनों ने अपने–अपने साथियों के साथ दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। अभी वह पानीपत तक भी नहीं पहुँचे थे कि उन्हें बादशाह के इंतकाल की खबर मिली। ''यह समाचार शाहजादा अहमद को पानीपत में 28 अप्रैल को प्राप्त हुआ। सफदरजंग के परामर्श के अनुसार उसने अपने को तुरन्त सम्राट घोषित कर दिया। सफदरजंग वजीर नियुक्त हुआ। इसके अतिरिक्त अवध तथा इलाहाबाद के सूबों का शासन भी उसके हाथों में रहा। इस समय तक सारा दक्षिणी प्रदेश दिल्ली के हाथों से निकल चुका था। कुछ प्रान्तों पर मराठों का तथा कुछ पर आसफजाह के वंश का अधिकार था। बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा पर पहले से ही मराठों की चौथ लग गयी थी। सूरजमल के नेतृत्व में जाटों ने आगरा के सूबों के काफी क्षेत्र का अपहरण कर लिया था। राजपूत राजा पहले ही स्वतंत्र हो बैठे थे। जो प्रदेश सीधे सम्राट के अधिकार में रह गया था, वह था दिल्ली तथा अटक के बीच में उत्तर–पश्चिमी तथा दोआब के कुछ भाग।''[3] इस प्रकार से जिस समय अहमदशाह ने मुगल सत्ता की बागडोर सम्भाली, कई गम्भीर राजनैतिक चुनौतियाँ उसके सामने थीं, जिसका उसे सामना करना था। सबसे महत्वपूर्ण बात जो थी, वह यह थी कि साम्राज्य का वजीर किसे बनाया जाय। इस वजीर के पद को लेकर दिल्ली में राजनीति काफी तीव्र हो चुकी थी और इस पद पर क्रमशः ईरानी और तूरानी दोनों ही गुट के लोग अपना–अपना दावा प्रस्तुत कर रहे थे। इसी बीच 31 मई 1748 ई0 को निजाम–उल–मुल्क की मृत्यु हो गयी, जिससे यह संकट और भी अधिक गहरा गया। चूँकि निजाम का उत्तराधिकारी इन्तजामुद्दौला इस पद पर अपना अधिकार समझ रहा था, वहीं दूसरी ओर मनुपुर के युद्ध में विजय के उत्साह तथा शाहजादा अहमद द्वारा सफदरजंग

1 वीर विनोद, श्यामल दास, पृ0 1158
2 अवध के प्रथम दो नवाब – डा0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, पृ0 130
3 मराठों का नवीन इतिहास, द्वितीय खण्ड, जी0एस0 सरदेसाई, पृ0 375

के साथ किये गये वायदे के कारण सफदरजंग इस पद पर अपना अधिकार समझता था। इन्हीं परिस्थितियों में जब ''मुगल सम्राट ने 29 जून 1748 ई0 को विधि पूर्वक वजीर के पद पर सफदरजंग की नियुक्ति कर दिया। उसको बहुमूल्य पुरस्कार प्रदान किया, 8 हजार जात और 8 हजार सवार के मनसब के साथ ही साथ 'जमतुल्मुल्क अबुल मन्सूर खाँ बहादुर सफदरजंग सिपहसालार' की उपाधियों से विभूषित किया।''[4] तो निजाम के उत्तराधिकारी इन्तजामुद्दौला के मन में इस नये वजीर के प्रति घृणा उत्पन्न हो गयी क्योंकि वह उसको अपने वजीर बनने में बाधक समझ रहा था। उसका मानना था कि वजीर का पद जो कि उसे मिलने वाला था, सफदरजंग ने उसका अपहरण कर लिया है। इस समय ईरानी और तूरानी गुटबाजी अपने चरम पर थी। दोनों एक दूसरे को नष्ट करना चाहते थे। इसी समय एक अन्य महत्वपूर्ण घटना घटी। जिसने स्थिति को और अधिक गम्भीर बना दिया। ''वजीर के अपसरण की इच्छा से इन्तजामुद्दौला ने जो अपने प्रतिद्वन्दी से योग्यता, साहस और सैनिक बल में बहुत कम था, नवम्बर 1748 ई0 के अन्त में उसके जीवन के विरूद्ध षड्यंत्र की रचना किया।''[5] षड्यंत्रकारियों ने अपनी योजना को वास्तविक रूप देने के लिए ''30 नवम्बर 1748 ई0 को ईद के दिन, जब वजीर ईदगाह में बादशाह के साथ सामूहिक नमाज में शामिल होकर वापस लौट रहा था, उस पर जानलेवा हमला किया। इस हमले में वजीर के कई अनुचर जो आगे घोड़ों पर थे, उनकी मृत्यु हो गयी। वजीर के स्वयं के घोड़े को भी गोली लगी और वह अपने मालिक समेत जमीन पर गिर गया।''[6] यद्यपि इस हमले में वजीर की जान तो बच गयी किन्तु अब वह अपनी सुरक्षा को लेकर आशंकित हो गया। उधर दरबार में भी सफदरजंग की स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी। ''बादशाह की माता ऊधमबाई और विश्वासपात्र जाबिद खाँ सभी महत्वपूर्ण कार्य अपने हाथ में लिये हुए थे। वजीर सफदरजंग और इन लोगों में कतई नहीं पटती थी।''[7] यह लोग हमेशा उसको नीचा दिखाने और उसको उसके पद से हटवाने के चक्कर में रहते थे। दरबार के तूरानी अमीर भी उसके विरूद्ध थे और यही हाल था दोआब एवं रूहेलखण्ड के पठानों का। कुल मिलाकर वजीर इस समय चारों तरफ से शत्रुओं से घिरा हुआ था। इधर वजीर सफदरजंग भी कम नहीं था। उसने राज्य को सुदृढ़ करने के स्थान पर अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पुराने वजीर कमरूद्दीन खान एवं सफदरजंग में पुरानी दुश्मनी थी। जब मनुपुर युद्ध की विजय के पश्चात् मुईन–उल–मुल्क को लाहौर की गवर्नरी प्रदान की गयी थी, तब से मुईन के प्रति सफदरजंग की ईर्ष्या और भी बढ़ गयी थी और वह उसे सदैव नीचा दिखाने तथा उसकी शक्ति को कम करने के लिए प्रयास करता रहता था। इस प्रकार से मुगल राजधानी का राजनैतिक वातावरण भी इस समय अब्दाली के लिए भारत पर आक्रमण करने के लिए उपयुक्त था। अब्दाली मुगल दरबार पर निरन्तर नजरें गड़ाये था। उसे इस बात की भी जानकारी थी कि जब तक सफदरजंग केन्द्र में है, मुईन को दिल्ली से किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलने वाली है।

यद्यपि अहमदशाह के शासन के प्रारम्भिक वर्षो में पंजाब में शान्ति एवं समृद्धि रही। सूबे का नया गवर्नर मोईन–उल–मुल्क योग्य एवं कुशल प्रशासक सिद्ध हुआ। ''उसने कौरामल तथा उसके सहायक को न्यायिक दीवान के पद पर नियुक्त किया तथा अदीनाबेग खान की सेवाएं बरकरार रखी, जिसने जालंधर तथा दोआब के प्रशासन का प्रबन्धन बड़ी ही कुशलतापूर्वक किया था। लेकिन इसी बीच सिक्ख फिर समस्या का कारण बनते जा रहे थे।''[8] चूँकि अब्दाली के आक्रमण के कारण समस्त साम्राज्य की शक्ति, ऊर्जा, संसाधन एवं ध्यान उसी ओर केन्द्रित हो गया जिससे सिक्खों को पुनः संगठित होने तथा अपनी आक्रामक गतिविधियाँ तेज करने का अवसर प्राप्त हो गया। कुल मिलाकर इस समय दिल्ली से लेकर पंजाब तक का जो राजनैतिक वातावरण था, वह किसी भी आक्रमणकारी के लिए आकर्षण का विषय हो सकता था यद्यपि मनुपुर के युद्ध में अपनी पराजय के पश्चात् अब्दाली वापस चला गया था किन्तु हिन्दुस्तान सम्बन्धी अपनी योजना को वह अपने मस्तिष्क से निकाल नहीं

4 सियरूल मुतैखरीन, तृतीय, पृ0 868–69

5 अवध के प्रथम दो नवाब – डा0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, पृ0 137

6 अवध के प्रथम दो नवाब – डा0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, पृ0 138

7 मध्यकालीन भारत का इतिहास 1656–1761 भाग–6, सम्पादक – शिवकुमार गुप्त

8 हिस्ट्री आफ दि पंजाब – एस0एम0 लतीफ, पृ0 220

पाया था। उसकी आँखें अपने पूर्ववर्ती नादिरशाह के समय से ही भारत की धन–सम्पदा पर लगी हुई थी और केवल एक पराजय उसके दृढ़ इरादों को बदल नहीं सकती थी। जिस समय अब्दाली मनुपुर के युद्ध में व्यस्त था, उसी समय उसके भतीजे ने विद्रोह करके स्वयं को स्वतंत्र रूप से स्थापित करने का प्रयास किया था। किन्तु अहमदशाह अब्दाली ने शीघ्र ही अपने भतीजे लुकमान खान के विद्रोह को दबाकर अपने साम्राज्य को सुरक्षित कर लिया। इसके पश्चात उसने कंधार मे अपने भविष्य की योजनाएं बनाने तथा सम्भावित अभियानों की तैयारियाँ करने में कई माह का समय व्यतीत किया। इस समय उसके सामने दो प्रमुख लक्ष्य थे, पहला था भारत में अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करना और दूसरा था–हेरात पर अपना नियंत्रण स्थापित करना। ''हेरात अब्दाली जनजाति का मूल निवास स्थान था, यह एक महत्वपूर्ण अफगानी प्रान्त था परन्तु ये सूबा अभी भी ईरानियों के नियंत्रण में था।''[9] जबकि तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए बिना हेरात के एक सुदृढ़ अफगानिस्तान की कल्पना करना भी व्यावहारिक नहीं होता। इन दोनों प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार करने के पश्चात् अब्दाली ने पहले भारत पर आक्रमण करने का निश्चय किया। इसके पीछे मुख्य रूप से तीन कारण थे। पहला कारण यह था कि ''मनुपुर के युद्ध का नायक अमीर मुईन–उल–मुल्क (मीर मन्नू) पंजाब का गवर्नर था और उसने अब अपनी शक्ति काफी बढ़ा लिया था।''[10] अब वह इस स्थिति में था कि अहमदशाह की कंधार से अनुपस्थिति के दौरान पेशावर और अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों में गड़बड़ी पैदा कर सकता था। दूसरा कारण यह था कि ''काबुल का पूर्व गवर्नर नासिर खान को पुनः उस प्रान्त का गवर्नर (12 अप्रैल 1748) नियुक्त कर दिया गया था तथा मुईन–उल–मुल्क ने उसे काबुल को पुनः प्राप्त करने में मदद का वादा किया था।''[11] यदि इस समय अब्दाली हेरात अभियान में उलझ जाता तो मुईन–उल–मुल्क और नासिर खान की सम्मिलित सेना काबुल के लिए संकट पैदा कर सकती थी। तीसरा कारण यह था कि मनुपुर के युद्ध में मिली पराजय के कलंक के साथ वह आत्मविश्वास के साथ हेरात अभियान पर नहीं निकल सकता था क्योंकि हेरात में उसकी सफलता के लिए उसके अफगान सैनिकों में खोये हुए मनोबल को पुनः स्थापित करना आवश्यक था। चौथा कारण यह था कि पंजाब से लेकर दिल्ली तक का राजनैतिक वातावरण इस समय आक्रमण के लिए उपयुक्त था। इन सभी कारणों पर अब्दाली ने गम्भीरतापूर्वक विचार करने के पश्चात् अपने हेरात अभियान से पहले ही भारत पर आक्रमण करने का निश्चय किया, जो कि तत्कालीन परिस्थितियों के सर्वथा अनुकूल था। ''1748 ई0 में बरसात की समाप्ति के समय अब्दाली ने दुबारा सिन्धु को पार किया।''[12] उसने पेशावर तथा आस–पास के कबीलाई लोगों को पहले ही आदेश भेज दिया था कि उससे मिलने के लिए तैयार रहे। ''पेशावर पहुँचकर उसने प्रसिद्ध संत शेख उमर से भेंट किया तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। तत्पश्चात् उसने जहाँखान पॉपलेजी को एक सुसज्जित टुकड़ी के साथ पहले ही भेज दिया। बहुत से खाटक जनजाति के लोग इस दौरान उसके साथ हो लिए। बहुत से स्थानीय जमींदार भी उसकी सेना से आकर मिल गये।''[13] जब यह समाचार मुईन–उल–मुल्क को मिला तो उसको दो कार्य करने थे – पहला यह कि मुगल सम्राट से अतिरिक्त सहायता प्राप्त की जाय किन्तु वजीर के साथ उसके तनावपूर्ण सम्बन्धों एवं दरबारी गुटबाजी के चलते यह सम्भव नहीं हो सका। दूसरे यह कि अपने उपलब्ध संसाधनों के प्रयोग से द्वार पर खड़ी विपत्ति को टाला जाय। अपने इन्हीं उद्देश्यों से ''पंजाब के इस युवा गवर्नर ने दिल्ली से तत्काल सहायता की मांग की, लेकिन उसने बिना कोई समय व्यर्थ गवाएं अपने पास उपलब्ध संसाधनों एवं सेना के साथ लाहौर से प्रस्थान किया और चिनाब के दक्षिणी किनारे पर 'शोडरा' (SOHDARA) में अपना खेमा डाल दिया।''[14] जिससे शत्रु की प्रगति को रोका जा सके। ''उसने अपनी अनुपस्थिति में 'सैय्यद एवाज खान' को लाहौर में अपने सहायक के रूप में नियुक्त किया। उसकी सेना का कई महीनों का भुगतान शेष था इसलिए उसने इच्छा व्यक्त

9 अहमदशाह दुर्रानी फादर आफ माडर्न अफगानिस्तान – गंडा सिंह पृ0 72

10 वही

11 तहमास्नामा, पृ0 12

12 हिस्ट्री आफ दि पंजाब – एस0एम0 लतीफ, पृ0 221

13 शाहनामा–ए–अहमदिया, 114; अहमदशाह दुर्रानी फादर आफ माडर्न अफगानिस्तान – गंडा सिंह पृ0 74

14 हिस्ट्री आफ दि पंजाब – एस0एम0 लतीफ, पृ0 221

किया कि लखपतराय इस भुगतान का प्रबन्ध करे। परन्तु दीवान ने सूचित किया कि इस अव्यवस्था भरे माहौल में धन एकत्र नहीं किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में मुईन–उल–मुल्क को अपने खजाने के द्वार खोलने पड़े जिससे इन लोगों का भुगतान किया जा सके।''[15] ऐसा उसने इसलिए किया था क्योंकि अब तक उसे पूर्ण विश्वास हो चुका था कि उसे दिल्ली से किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं मिलने वाली है। कुछ समय तक दोनों ही पक्षों में छिटपुट संघर्ष होता रहा परन्तु कोई निर्णायक युद्ध नहीं हुआ। ''अहमदशाह अब्दाली ने अपनी सेना को दो सेक्शन में बाँट दिया। एक सेक्शन की कमान अपने स्वयं के हाथ में रखा, जिससे वह शोडरा में मुईन से संघर्ष कर सके। दूसरे सेक्शन की कमान सरदार जहाँखान के हाथों में थी। उसको ये आदेश दिया गया था कि वह मुईन के पिछले हिस्से को निशाना बनाये तथा लाहौर के आस–पास के समस्त क्षेत्र को तहस–नहस कर डाले। इस कार्य में जहाँ खान को कुछ हद तक सफलता भी मिली किन्तु यहाँ पर आगे उसका मार्ग बाधित था, जिसके कारण वह शहर में प्रवेश करके उसे कब्जे में नहीं ले सका। 'ऐवाज खान' ने इस क्षेत्र में अफगानों के सामने अवरोध उत्पन्न किये तथा उन पर लगातार फायरिंग किया। इस प्रकार से जब उसका शहर पर कब्जा करने का प्रयास विफल हो गया तो वह सेना के मुख्य भाग में वापस आकर मिल गया।''[16] चेनाब तक दुर्रानियों के आगमन तथा पूरे क्षेत्र की उनके हाथों बर्बादी की खबर लगातार मुगल सम्राट एवं वजीर के पास पहुँच गयी थी। किन्तु किसी ने भी लाहौर के गवर्नर की सैन्य तथा आर्थिक सहायता के विषय में कोई विचार नहीं किया। इस प्रकार मुईन–उल–मुल्क को उसके स्वयं के भरोसे छोड़ दिया गया। ''उधर अब्दाली का भी शासन सिन्धु के पार पूरी दृढ़ता के साथ अभी स्थापित नहीं हो पाया था तथा वह स्वयं भी मीर मन्नू की वीरता से प्रभावित था। अतः उसने भी समझौता करने में बुद्धिमानी समझी।''[17] इस दशा में ''अब्दाली का एक दूत मेहराब खान आत्म–समर्पण के लिए लिखा हुआ पत्र लेकर मुईन–उल–मुल्क के पास आया।''[18] ''आक्रमणकारी ने आत्म–समर्पण के साथ ही साथ गुजरात, औरंगाबाद, पशरूर और सियालकोट के क्षेत्र के साथ ही साथ पिछले बकाया राजस्व जो कि 14 लाख रूपया मुगल सम्राट मुहम्मदशाह ने नादिरशाह को देने का आश्वासन दिया था किन्तु दिया नहीं था, प्रदान करे। मुईन–उल–मुल्क ने इस पत्र को सम्राट के पास आदेश एवं सहायता के लिए भेज दिया। किन्तु मुगल सम्राट ने सैन्य सहायता भेजने में अपनी असमर्थता व्यक्त की और उक्त क्षेत्रों को देकर अब्दाली के साथ समझौता कर लेने को कहा और इस सम्बन्ध में आधिकारिक तौर पर एक पत्र भी भेज दिया।''[19] अब मुईन ने शान्ति स्थापित करने का निर्णय लिया और ''एक वरिष्ठ राजनयिक मौलवी अहमदउल्ला को शान्ति वार्ता करने तथा सन्धि की शर्तो को तय करने के लिए नियुक्त किया।''[20] अब्दाली मुईन द्वारा भेजे गये मौलवी अहमदउल्ला को रिसीव करने अपने कैम्प से बाहर आया तथा उनका स्वागत किया। ''अब्दाली मुईन–उल–मुल्क द्वारा भेजे गये बहुमूल्य उपहारों को देखकर प्रसन्न हुआ तथा सन्धि की शर्ते दोनों पक्षों के लिए संतोषप्रद हो, इस प्रकार निश्चित की गयी।''[21] ''इस बात पर सहमति बनी कि सिन्धु के पार के पश्चिम का समस्त भू–भाग अफगान प्रभुता का क्षेत्र माना जायेगा।''[22] इतना ही नहीं ''सियालकोट, औरंगाबाद, गुजरात और पशरूर जिलों का राजस्व जो कि 14 लाख प्रतिवर्ष आँका गया था, अब्दाली को प्रदान किया जायेगा।''[23] इसके साथ ही साथ ''पंजाब का गवर्नर इस बात के लिए भी राजी हुआ कि अब वह सूबे का शासन आक्रमणकारी शासक के नाम पर करेगा तथा नियमित रूप से राजस्व अदा करता

15 अहमदशाह दुर्रानी फादर आफ माडर्न अफगानिस्तान – गंडा सिंह पृ0 74
16 उमदत–उत्–तवारीख, 129; अहमदशाह दुर्रानी फादर आफ माडर्न अफगानिस्तान – गंडा सिंह पृ0 75
17 हिस्ट्री आफ दि पंजाब – एस0एम0 लतीफ, पृ0 221
18 अहमदशाह दुर्रानी फादर आफ माडर्न अफगानिस्तान – गंडा सिंह पृ0 76
19 ए स्टडी ऑफ एट्टीन सेंचुरी इण्डिया – जगदीश नारायन सरकार, पृ0 134
20 तहमास्नामा, पृ0 11
21 अहमदशाह दुर्रानी फादर आफ माडर्न अफगानिस्तान – गंडा सिंह पृ0 77
22 वही
23 मराठा पालिसी टुवार्ड्स नार्दर्न इण्डिया – पूनम सागर, पृ0 55

रहेगा।''[24] एक प्रकार से यदि देखा जाये तो यह सन्धि 1739 ई0 में मुगल सम्राट मुहम्मदशाह तथा नादिरशाह के मध्य की गयी सन्धि की पुनरावृत्ति मात्र थी। ''मुईन ने ये सन्धि अपने स्वामी मुगल सम्राट अहमदशाह के परामर्श एवं अनुमोदन के अनुसार ही की थी तथा नासिर खान को इन चार महल का प्रबन्ध करने तथा वार्षिक राजस्व काबुल भेजने के लिए मुगल दरबार से नियुक्त किया गया था।''[25] लेकिन यदि इस सन्धि का मूल्यांकन किया जाय तो यह दिखाई देता है कि मुगल सम्राट ने इसका अनुमोदन इसलिए किया था क्योंकि इस समय उसकी पहली इच्छा यह रही होगी कि अपने पुराने मित्र मुईन को इस कठिन स्थिति से निकाला जाय, वहीं दूसरी तरफ यह भी दिखाई देता है कि ऐसा उसने अपने वजीर सफदरजंग के परामर्श से किया होगा। इस प्रकार से इसके पीछे दो मंतव्य दिखाई देते हैं – पहला तो यह कि अफगानों को भारत से दूर रखा जाय तथा अनावश्यक खून–खराबे को रोका जाय जबकि दूसरा – यह था कि सफदरजंग अपने चिर–प्रतिद्वन्दी मुईन की शक्ति एवं प्रभाव को कम होते हुए देखना चाहता था। लेकिन वास्तव में यह सन्धि अब्दाली के लिए अधिक लाभप्रद थी। उसने मनुपुर के युद्ध में अपने ऊपर लगे हुए कलंक को धो दिया था तथा मनुपुर के नायक मुईन को घुटने टेकने पर विवश करने के साथ ही साथ, हेरात अभियान के समय पूर्व से संभावित मुगल खतरे को समाप्त कर दिया तथा इस सन्धि से उसे प्रतिवर्ष 14 लाख रूपये का राजस्व भी प्राप्त होना था। इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि इससे उसे भारत तथा अपने घर दोनों ही जगहों पर अपनी प्रतिष्ठा को स्थापित करने में सफलता प्राप्त हुई। ''1750 ई0 में उसकी वापसी के समय दक्षिणी अफगानिस्तान की जनजातियों ने आत्म समर्पण कर दिया। बलूचस्तिान में कलात के प्रमुख ने भी उसको ज्वाइन कर लिया।''[26] चार जिलों के विषय में सर जदुनाथ सरकार ने अपनी पुस्तक फाल ऑफ दि मुगल एम्पायर प्रथम में बताया है कि ''यद्यपि इनका प्रशासन अभी भी मुगल शासक के प्रतिनिधि उसके नाम पर कर रहे थे किन्तु फिर भी अब्दाली को भारत से पहला टुकड़ा प्राप्त हो गया था।''[27] इस प्रकार से इस सन्धि ने जहाँ अपने लिए सिन्धु पार के क्षेत्र तथा चार महालों (गुजरात, औरंगाबाद, सियालकोट, पशरूर) का राजस्व प्राप्त करने का आश्वासन प्राप्त किया, साथ ही अपनी सीमा पर स्थित मुगल गवर्नर की शक्ति को कम करने में भी सफल रहा था। वही मुईन ने अपनी स्थिति को देखते हुए समझौता करके, न केवल अनावश्यक होने वाली जन एवं धन हानि को होने से रोक लिया बल्कि इस क्षेत्र में कुछ समय के लिए शान्ति स्थापित करने का प्रयास भी किया। अब्दाली की महत्वाकांक्षाओं को देखते हुए यह स्पष्ट हो चुका था कि यह शान्ति स्थायी नहीं है और आने वाले समय में भारत को अभी और समस्याओं से जूझना होगा। इस प्रकार से यद्यपि मुईन ने समस्या को कुछ समय के लिए टाल अवश्य दिया था किन्तु यह इसका स्थायी हल नहीं था।

244 हिस्ट्री आफ दि पंजाब – एस0एम0 लतीफ, पृ0 221

25 हिस्ट्री आफ इण्डिया, VIII, इलियट एण्ड डाउसन, पृ0 115

26 ए स्टडी ऑफ एट्टीन सेंचुरी इण्डिया – जगदीश नारायन सरकार, पृ0 134

27 दि फाल आफ मुगल एम्पायर, प्रथम – जदुनाथ सरकार, पृ0 419